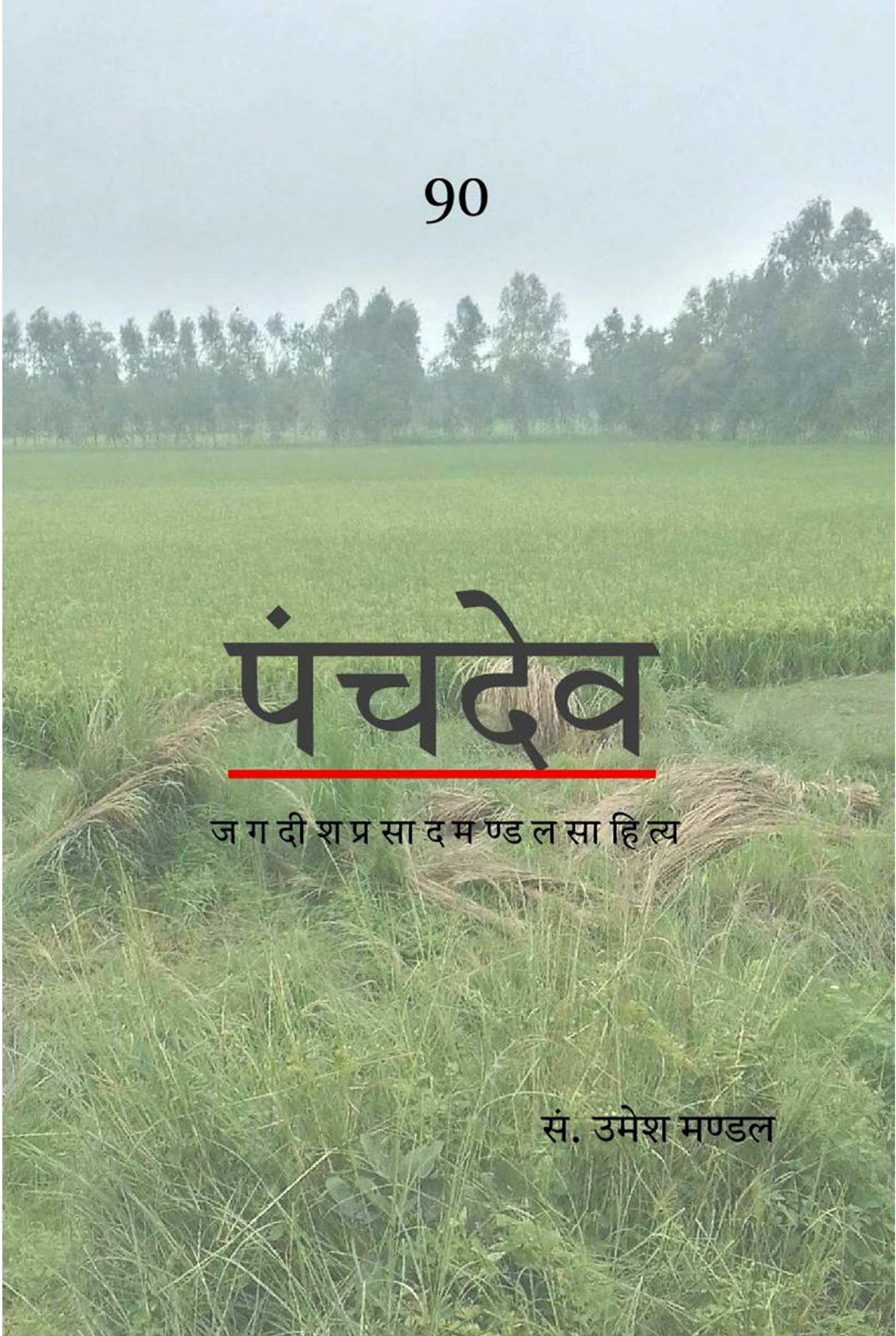


90

# पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

# पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल

पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-88421-67-6

**दाम :** ₹50/-

**पहिल संस्करण :** 2018

**प्रकाशक :** पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

**वेबसाइट :** http://pallavipublication.blogspot.com
**ई-मेल :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
**मोबाइल :** 8539043668, 9931654742

**प्रिन्ट :** मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
**आवरण :** श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

**PANCHDEO : 90**
*Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.*

## दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ठ रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

**उमेश मण्डल**

**निर्मली**

**24 नवम्वर 2018**

# कथाक सत्तैर-


बेटी हम अपराधी छी/09

भोलानाथ बाबा/24

घटक बाबा/35

इजोरिया राति/37

भँसैत नाह/45

# बेटी हम अपराधी छी

सही समयसँ साल भरि पहिनहि मनोहरकेँ सेवा मुक्तिक चिट्ठी ऑफिसमे थम्हा देलकैन। थम्हबैक कारण रहैन काजक गजपटी। काजक गजपटीक कारण छेलैन मनक सन्ताप। ऑफिसक सभ मानि गेल जे मनोहरक मन चढ़ि गेलैन तँए समुचित काज करइ जोग नै रहला।

ऑफिसेक कुरसीपर मनोहर बैसल रहैथ कि चपरासी आबि हाथमे चिट्ठी थम्हेलकैन। पहिने तँ नै बुझि सकला जे सेवामुक्त भऽ रहल छी मुदा पढ़ला पछाइत केकरोसँ पुछौक जरूरत नै रहलैन। पत्रमे कोनो लेन-देनक कारण नहि, बतहपनीक कारण स्पष्ट लिखल रहैन। पत्र पढ़िते जहिना बर्खा होइकाल अनासुरती मेघ ढनढ़नाए उठैए तहिना एकाएक मनोहरक मनमे उठलैन। जेकरो कहबै सेहो बताहे बुझि सुनबो ने करत! तखन, कहबे किए करबै? अनेरे मुहोँ दुरि करब..!

मनोहरक मन जेना बेर-बेर चनकए लगलैन। टुकड़ी-टुकड़ी भेल मनमे उठलैन जे सभटा कागत-पत्तरकेँ छीट-छाटि दिऐ, टेबुल-कुरसीकेँ उनटा-पुनटा दिऐ आ निकैल जाइ। मुदा मनोहरक मनक लगामकेँ बुधि पाछू खिंचलकैन। बदलैत सोच विचार केलकैन जे एक तँ लिखतन बताह बनाइए देलक तैपर एहेन काज जँ करब तँ थियोरी प्रेक्टीकल भऽ जाएत, तखन बतहपनीक सजाक हकदार बनैमे केते देरी लगत?

कुरसीसँ उठि मनोहर सोझहे घरमुहाँ भऽ गेला। डेराक सुधिए ने रहलैन जे भड़ो-किराया फरिछा लितैथ। मनोहरक बेसुधि मनमे बेठेकान सोच लगले उठैन आ पानिक बुलबुला जकाँ फुटि जाइन।

गामक सीमा परहक बड़क गाछ देखते मनोहरक आँखिक सोझमे भकइजोत जकाँ भेलैन। भकइजोतेमे देखलैन जे यएह अपन गाम छी। मनमे अप्पन अबिते पएर जवाब देलकैन-

"आगू नै बढ़ब। गाममे मुँह देखबैबला नै छी।"

मुदा तपाएल मुँह लगले पएरकेँ कहलकै-

"ईह बुड़ि रे, मुँह देखबैबला नै छी! ई समाज मुँह देखबैबला नइए। हरिदम विवेक-विवेकक भाँग घोरि-घोरि इनारेक पानिकेँ निशाँए देने अछि आ निरलज जकाँ बजैमे लाजे ने होइ छै, सुझबे ने करै छै जे जखन पाइक हाथे शिक्षा बिकाइए तखन ओ शिक्षा पाइबलाकेँ हएत आकि बिनु पाइबलाक! जइ समाजमे रोग-वियाधि पाइक हाथे छोड़ौल जाइ छै तइ समाजमे बिनु पाइबलाक गति-मति की हेतइ! रौद-बसात, जाड़, पानि-पाथरक रक्षा केना करत। अदौसँ अबैत नर-नारीक सम्बन्धक बीच जखन दान-दहेज एहेन बड़का मोनि घारक पेटमे फोड़ि देने अछि, जइमे केते हाथियो-घोड़ा फँसि जान गमा रहल अछि, तइ मोनिमे अदना-अदनीक अह्लादे केतै कएल जा सकैए। महींसक आगू वीणक कोन मोल छइ।"

मने-मन मनोहर घर दिस बढ़ैक हूबा करैथ मुदा पएर उठैले तैयार नै होइन। जँ पएर थोड़े तैयारो होनि तँ आँखि साफे नहि। धरतीपर ओंघराएल मनोहरक सभ सुधि-बुधि हेरा कऽ छिड़िया गेलैन।

मोबाइलक जुग रहने समाचार पसरैमे देरीए किए लगत। गाम-समाजक बच्चा-बच्चा बुझि गेल जे मनोहर बताह भऽ गेला, नोकरीसँ निकालि देलकैन। पेंशनो आने-आन लूटतैन।

सुनयनाकेँ पहिने बिसवास नै भेलैन। आइ धरिक जे पति-प्रेम

मनोहरसँ भेटल छेलैन ओ अनकासँ बहुत बेसी छेलैन। मुदा जानकी बेटीक काँच बुधि मानि गेल रहै जे पिता पागल भऽ गेला, नोकरीसँ भगा देलकैन।

गामेक लोकक जेरक संग दुनू माय-धी विदा भेली। लोकक बीच रंग-रंगक घौचाल चलैत रहइ। कोनो नीको मुदा बेसी अधले। घौचाल सुनि दुनू माय-धीक मन विचलित हुअ लगलैन। बेटीक मुँह सुनयना निहारए लगली आ माइक मुँह जानकी। पोखैरक घाटपर भुरही-माछ जहिना रंग-रंगक चाल चालि दैत तहिना दुनू माय-धीक कानमे रंग-रंगक चालिक बात पड़ए लगल... ।

कचकूह मन जानकीक तँए बेसी विचलिते होइत गेल। बताह भऽ बाबू छोड़ि पड़ाए जेता, समाज सहजे हमरा सन-सनकेँ भगाइए रहल अछि। तखन माइक की गति हएत..!

अधबटियाक पछाइत सुनयनोक मन मानि गेलैन जे पति पगला गेला। जानकीपर नजैर अँटका मने-मन सोचए लगली जे बाइस बर्खक कुमारि बेटीक मुँह सिंह दुआरिपर केना देखब? की दुनियेँ उजैर रहल छै आकि उजाड़ि चढ़ा देलक अछि? एको बीत धरती नै बँचल अछि जेतए नोरक धार सुखौल जाएत..!

जहिना दंगलक खलीफा पटका चारू नाल चीत अखड़ाहापर खसैए तहिना मनोहर बड़का गाछक निच्चाँ जिनगीक अखड़ाहापर चारूनाल चीत भेल पड़ल मने-मन सोचैत रहैथ- अपन जिनगीक हारिक कारण अपने छी तँए पत्नियो आ बेटियो-ले अपराधी छी! मुदा फेर मन कहैन जे अपराध कथी केलौं जे अपराधी भेलौं?

भवसागरमे डुमल मनोहरक शरीर चेतनशून्य छेलैन। तखने पत्नियोँ आ बेटियो लगमे पहुँच मुँह निहारए लगलैन। मँह देखते दुनूक मन कहलकैन- मुँहक रूखि कहाँ कहै छैन जे कोनो रोग अछि। रणभूमिक

हारिक रोग आ बिमारीक रोग तँ अपन बात अपने चिकैर-चिकैर कहै छै किने जे की छी...।

बन्न मुँह देख मनोहरक छातीपर दुनू गोरे अपन-अपन सती हाथ रखलैन। छातीक धुकधुकी समतूले बुझि पड़लैन। आखिर किछु छैथ तँ एकक पिता, दोसराक पति छैथ किने। मुदा दुनूकेँ अपन-अपन बिसवासमे शंका भेल। शंका होइते एक-दोसराक मुँह सुनयनो आ जानकियो देखए लगली। देखते आँखि-आँखिक बीच जेना पुल बनि गेल। सुनयनाकेँ सान्त्वना दैत जानकी कहलक-

“माए, बाबूजीक हृदय तँ ओहिना पवित्र देखै छिऐन!”

कदमक गाछक झूला जकाँ आस मारि सुनयना बजली-

“बेटी, पुरुखक छातीपर बहुत भार होइ छइ। जेकरा माथपर जारैनक बोझ आकि अन-पानिक बोझ पड़बे ने कएल ओ ओइ बोझ उठबैबला छातीक धुकधुकी गनि केना सकैए। से नहि तँ छातीए डोला कऽ देखहुन जे मुहसँ केहेन बकार निकलै छैन।”

माइक विचार सुनि जानकी आरो जाँच-पड़ताल करब नीक बुझलक। जहिना कलियाएल अड़हुल फुलाएल रहैए तहिना जानकीक मन पिताक छातीसँ ससैर हाथ दिस बढ़लैन। केना नै बढ़ैत कहुना अछि तँ छातीक ऊपरेसँ ने लटकल अछि। जानकी बाजल-

“माए, से नहि तँ छातीक धुकधुकीसँ अपनो मन धुकधुकाइते अछि। हाथक नारी पहिने देख लहुन।”

नारी तँ नारी छी, एक पुरखियाह। छाती जकाँ दुनू गोरे एक्केबेर थोड़े पकैड़ सकै छेली, नारीकेँ तँ बेरा-बेरी देखए पड़त, मुदा पहिने के देखत? दुनूक बीच ओझरी लगि गेलैन। एक पुरुख हजार रूप! की मनोहर जानकियो-ले वएह छैथ जे सुनयना-ले छथिन? मुदा की मनोहर सुनयनाक छिऐन आ जानकीक नहि? तखन? तैबीच जानकी सुनयनाकेँ

कहलक-

“माए, छातीक धुकधुकी तँ जोरसँ चलै छै तँए गनल भऽ जाइए मुदा हाथक नारी आइ धरि कहाँ गनलौं?”

बेटीक बात सुनयनाकेँ सोहनगर लगलैन। ऐठाम कियो आन अछि, जे ऐछो ओ तमसगीरे अछि, उकटा-चाल करत। बामा हाथसँ तरहत्थी पकैड़ सुनयना अपन दहिना हाथ मनोहरक वाजूपर देलखिन। मनोहरक वाजूपर हाथ पड़िते सुनयनाक कानमे झड़झड़ाए लगलैन-

“सुनयना! बहुत आशा जिनगीसँ केने छेलौं, मुदा टुटि कऽ सभटा छिड़िया गेल। समाजक डर हमरा नै होइए मुदा अहाँ पत्नी छी तँए कहै छी। बताह बना बतहपनीक फरमान हाथमे धरा देलक। कमेलहो खेलक आ ऐगलो कमाइ मारलक। जखने घरसँ निकलब धिया-पुता जानि-जानि देहपर कियो गोला फेकत, कियो काँट फेकत, कियो गोबर माटि फेकत! केकरा की कहबै, हमरा बातकेँ कियो कान धड़त? आइ दस बर्खसँ जानकीक बिआहक पाछू पड़ल छेलौं, मास दिन पूर्व जवाब भेटल जे वैवाहिक सम्बन्ध भंग भऽ गेल!”

सुनयना अपन कानकेँ आरो ठाढ़ करैत पतिक वाजूमे सटौलैन। मनोहरक वाजूमे कान सटिते धड़धड़ाइत अवाज आबए लगल-

“हम ओइ चुगलासँ पुछै छिऐ जे कोन बुधिए जमाए बनि एते सेवा करौलक! बाइस बर्खक बेटीक मुँह देखल जाएत। जखन घरक भार उठबैमे अक्षम भऽ गेलौं तँ अनेरे जीविए कऽ की करब। मुदा परिवार? सेहो कहाँ रखि पौलौं! दस बर्खक अवस्थामे बेटी कन्यासँ कनियाँक रूप धारण करए लगैए तैठाम जानकीक बिआहक चर्च पत्नी दस बर्ख पूर्व बारह बर्खक अवस्थामे केलैन। अपनो ओइ पाछू पड़लौं। काजोक अगुताहत नहियेँ बुझि पड़ल किएक तँ समयानुसार परिवर्त्तन हेबेक चाही। बीस-बाइस बर्खक बच्चिया समाजक कुमारि बच्चिया छी तँए

समाजमे केकरो चौह अलगबैक अधिकार नइ छै जे ओकरा अलग बुझए। जँ जमीनो बेचि जानकीक बिआह कऽ लइ छी तँ की समाज भार उठौत जे एहेन काज आगू नै हएत?"

विस्मित भेल सुनयनाकेँ देख जानकी बाजल-

"माए, कनी हमरो बाबूक नारी देखए दे।"

बेटीक बोल सुनि सुग्गाक लोल सुनयना निहारए लगली। निहारिते मनमे उठलैन- यएह अवस्था छी जखन लोक सती बनैए, यएह अवस्था छी जखन लोक वेश्या बनैए आ यएह अवस्था छी जइमे लोक मातृ-पितृ भक्त बनि भगवत भजन करैए। मुदा जानकी..?

पतिक हाथ सुनयना जानकीक हाथमे दैत कान ठाढ़ कऽ मुँह निच्चाँ गोड़ि लेली। पिताक नब्ज पकैड़ते जानकीक कानमे घनघनाइत अवाज आएल-

"बेटी जानकी! हम अपराधी छी। हमरासँ अपराध भेल।"

"नइ बाबूजी नहि! सौंसे दुनियाँ भलेँ कहए मुदा अपन जुआन नै निकैल सकैए। चौथारि सीमा धरि आबि अहाँ परिवारक सेवा करैत रहलिऐ। दुनियाँ बौक कहए कि बताह, कहह दियौ। मुदा अपन इमान कखनो धरमसँ विचलित नै हएत। हम मिथिवाला छी, हमरा वाजूमे शक्ति अछि। जहिना अपन कालखण्ड अपने इमानदारीसँ टपलौं तहिना ऐगला खण्ड हमरो छी। अपना दरबज्जापर बैस भगवत भजन करैत रहब, देहक चिन्ता नै करब। हमहूँ तँ सन्ताने छी किने। बेटा रहैत तँ बहिन बनि भार दैतिऐन। मुदा जखन भाए नै अछि तखन तँ हमहीं ने बेटा-बेटी भेलौं। ई प्रश्न हमरो भेल किने। बिआह हएत सासुर बसब, मुदा अहाँकेँ ऐ अवस्थामे छोड़ब केते उचित हएत। नीक-बेजाइक भार के उठौत। अपना जीबैत अपन माए-बापक एहेन गति भऽ जाए जे अनसोहाँतो-सँ-अनसोहाँत भऽ जाए, ई दोख केकरा सिर सवार हएत।

मुदा समाजो तँ तेहेन अछि जे छातीक कोन बात कोढ़-करेज धरि खोखैर-खोखैर खाइते आएल आ खाइते रहत। हे शिव! एहेन धनुष उठबैक भार जँ अपने नै लेब तँ की ई समाज उठा सकैए? की मिथिलांगना अखनो धरि ई नै बुझि सकली जे माए-बाप जनमदाते टा नहि छैथ, जिनगीक हारि-जीतक सूत्रधार सेहो छैथ, जँ से नहि तँ सासु पुतोहुकेँ भिखमंगनी बेटी कहि किए मुड़ी गोंतबै छथिन। जरूरत अछि समयानुसार शक्ति उपका संचय करैक। जाबे तक से नहि हएत ताबे तक पुरुखक नजैर निच्चाँ केना कऽ पाबि सकै छी। देखए पड़त अपन भूत आ भविस। जाधैर अपन भूत-भविस देख नै लेब, अपन-अपन बीर्तमानक लक्ष्मण रेखा खींच रक्षाक भार स्वयं नै उठा लेब ताधैर ऋृषिका, सती, साध्वी, पतिव्रता आदि-इत्यादिक शब्दक साकार जिनगी केना बनि सकत?”

जहिना नट-नटीनक नाचमे दर्शक चारू दिस घेरि बैसैत आ बीचमे दुनू अपन जिनगीक राग अलापैत रहैए तहिना समाजक लोकक बीच मनोहर, सुनयना आ जानकी अपन-अपन जिनगीक राग अलापि उठि कऽ घर दिस डेग बढ़ौलैन। मनोहरक दुनू हाथ पकड़ने आगू-आगू सुनयना-जानकी आ पाछू-पाछू धिया-पुतासँ चेतन धरिक डेग बढ़ए लगल।

घरक मुड़ेरा देखते मनोहर दुनूक हाथ झमाड़ि कऽ छोड़ौलैन आ बजला-

“बिसवासघात..! बिसवास घाती छी..! समाजमे जेहने मनुख रहत तेहने ने बनत। जे बिसवास देने छल सएह गर्त्तमे खसा पागल बना देलक! नहि सुनत दुनियाँ तँ नहि सुनह मुदा जाबे घटमे प्राण-घटवार रहत ताबे यात्रीकेँ कहबे करबै, कहिते रहबै।”

सातम दसकमे मनोहर जिला-कार्यालयमे किरानीक नोकरी शुरू

केने छला। समाजक पहिल विद्यार्थी मनोहर जे प्रथम श्रेणीसँ मैट्रिक पास केलैन। कौलेज लगमे नै रहने आगू पढ़ैक आशा तोड़ि जिनगीक मैदानमे उतरला। मुदा रिजल्टक कागत आँखिक सोझ अबिते मनमे उपैक गेलैन जे जहिना प्रथम श्रेणीक फल भेटल तेहने फलक गाछ रोपि ओकर सेवा टहल जिनगी भरि करैत अपनो आ समाजोकेँ नीक फल खुएबैन।

एक तँ सरकारी कार्यालयमे काज नै जे पढ़ल-लिखल सबहक अँटाबेस होइत, दोसर स्कूलो-कौलेज कम रहने सभ पढ़ियो ने पबै छल। मुदा मनोहरक संग संयोग नीक बैसलै। जिलाक कृषि विभागमे किरानीक नोकरी भऽ गेलइ। जहिना दशमीमे दुर्गास्थानमे साँझ दिअ जाइसँ पहिने अपन-अपन घरक भगवती-आगू साँझ दइए तखन दसनामा देवालयमे जाइए तहिना मनोहर नोकरीपर जाइसँ पहिने माता-पिताक असीरवाद लऽ लेब जरूरी बुझलक। खुशी तीनू गोरेक मनमे रहैन, मुदा तीनूक तीन रंगक। किए ने तीन रंगक रहितैन। हजारो रंगक फूलमे हजारो रंगक सुगन्ध होइ छै आ सभकेँ अपन-अपन सुगन्ध सिरजन करैक जहिना हक छै तहिना पसारैयोक छइहे।

दलानक ओसारपर बैस सत्यदेव कोदारिमे पच्चर लगबैत रहैथ। मनोहरकेँ खुआ आँगनमे माए असीरवाद देलक। आँगन-दलानक बीच मनोहरक मनमे उठल- ओह! माएकेँ तँ कहि देलिऐन जे नोकरीपर जाइ छी, असीरवादो देलैन जे आब तोंही सभ ने ऐ घरक खुट्टा भेलह। हम सभ तँ पाकल आम भेलौं। मुदा से नहि, जहिना माइक एक रूप छैन, पिताक एक रूप छैन तहिना एकटा संयुक्तो रूप तँ छैन्हे। तँए दुनू गोरेक ओइ रूपकेँ प्रणाम कऽ असीरवाद लेब मनोहरकेँ मनमे आएल। डेढ़िए-पर सँ बाजल-

“माए, कनी एमहर आ।”

शुभ काजमे विलमैक दोख अपनापर माए केना लेती, तँए अँइठे

हाथे दरबज्जापर पहुँच मनोहरकेँ पुछलखिन-

"की कहलह?"

तैबीच पिताकेँ गोड़ लागि मनोहर बाजल-

"बाबू, नोकरी करए जाइ छी।"

'नोकरी' कानमे पड़िते सत्यदेवक मन खुशिया उठलैन। मुदा सुगन्ध युक्त फुलबाड़ी आ बिनु सुगन्धक फुलबाड़ीक हवा जहिना दोरस रहैत तेना सत्यदेवकेँ नहि बुझि पड़लैन। असीरवाद दैत मनोहरकेँ कहलखिन-

"बौआ, डिक्शनरी जकाँ जँ तीनियोँ-टा शब्दक कोष बना लेबह तँ मुइला पछाइतो बेर-बेर दर्शन होइते रहत, आ भरल-पूरल देख आत्मा जुड़ाइते रहत।"

सिनेह सिक्त पिताक शब्द सुनिते मनोहर सहमल, सहैमते सुहकारैत बाजल-

"ओ तीन शब्द की छिऐ?"

"बौआ, पहिल- झूठ नै बजिहह, दोसर- केकरोसँ एक्को पाइ कहियो डाँरिहक नहि आ तेसर- दरबज्जापर जे मनुख-शक्लक आबैथ, हुनका एक लोटा पानिक आग्रह जरूर करिहौनु।"

पिताक मुँहक तीनू शब्दकेँ गुरु-पित वचन बुझि तत्काल मनोहर गीरह बान्हि रखि लेलक, रखबो जरूरी छेलइ। एगारह बजे ऑफिस पहुँचक छेलइ। मुदा पिताक वचनकेँ हास्य-कोषमे नहि हहासक डरसँ चाइलेंज-कोषमे लऽ अंगीकार केलक।

दुरगमनियाँ कनियाँ जकाँ मनोहर अपन उपस्थिति कार्यालयमे दर्ज करा, सभकेँ प्रणाम-पाती करैत कोहवर जकाँ असकरे कुरसीपर बैस गेल। कोनो काज नहि देख चुनौल तमाकुलक गीरह जकाँ गामक गीरह

खोलए लगल तँ भक्क-दे पिताक असीरवाद मन पड़लै। होइतो अहिना छै जे जखन रॉकैट तैयार भऽ उड़ैक रूप जखन धारण करैए तखन धरती छोड़ैसँ पहिने जहिना उनटा जाँच-पड़ताल होइ छै तहिना मनोहरो अपन जिनगीकेँ उनटा जाँच करए लगल मुदा पैछला कोनो बात मन नै पड़लै, पहिने पिताक वएह तीनू शब्द मन पड़लै जे तीनू प्रश्न बनि जिनगीक आगूमे ठाढ़ रहइ। मनमे उठलै- जँ अपन प्रश्नक जवाब दइ-जोकर नै छी तँ कोनो लजेबाक बात नहि, जे अपन कमजोरी केना सुहकारी। जाबे तक कोनो खेतमे नव सिरासँ जोति नव बीज नै देल जाइ छै ताबे नव फलक आशा केना हएत?

कुरसीपर बैसल मनोहरक मनमे पिताक असीरवादक तीनू शब्द तीन प्रश्नक गाछ रूपमे ठाढ़ भेल। कुशल माली जहिना सभ फूलक अपन-अपन पतियानी हियबैत तहिना मनोहरो अपन तीनू शब्दक पाँति हियाबए लगल। मुदा सतरंगा मकान बनौनिहार इंजीनियर जकाँ गुनियाँ-परकालसँ नइ गुनि, संकल्प बुझि विचारए लगल। ओना, विचारक खण्डन-मण्डन जेते बेसी होइ छै ओकर बीज-स्वरूप दूधक मक्खन जकाँ ओते बेसी भेटबो करै छइ। मुदा मनोहरकेँ मनमे उठि गेलै- मात्र दू घन्टा ऑफिसमे रहैक अछि। डेरो-डन्टा ठीक नहियेँ भेल अछि, तीन घन्टाक रस्ता काटि गामो जेनाइ अछि। तँए जेते खण्डन-मण्डन हेबा चाही तेते तँ नहि कऽ सकल, मुदा तात्विक विचार जरूर केलक। ओना, हनुमानजी जकाँ करखनो अकास मार्गपर नजैर पड़ै तँ विहाड़ि जकाँ भऽ जाइ, मुदा लगले महावीर जकाँ बदैल लिअए। 'झूठ नै बाजब।' कोनो बड़का प्रश्न थोड़े भेल। नान्हिटा प्रश्न अछि। ने हमरा एक सेलक जीवाणुक इतिहास देखैक अछि आ ने सोनाक लंका। चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे जे समैयक संग अबैत जाएत आ विवेक कहैत जाएत तेतबे करबाक अछि...। मनोहरकेँ मनमे खुशी भेलइ। जहिना तीन प्रश्नक उत्तरमे एक प्रश्न हल भेने पास नम्बर चलि अबैत तहिना मनोहरक मनमे पासक

आशा जगलै। आशा जगिते पास बदैल पासापर दोसर आस मारलकै जे 'दोसरकेँ नै डाँरब।' मुदा ईहो बड़ भारी प्रश्न नै बुझि पड़लै, मन कहलकै- अपन खर्चमे कमी-बेसी भेनहि ने लोक करजदार होइए आकि कर्जदाता मुदा जँ सरपट चालि पकैड़ चलब तँ किए दुनूमे सँ कियो भेँट हएत। मुदा समाजक बीच परिवारकेँ रखैक जखन खगता मनमे एलै तँ सोल्हन्नी सरपट नै देख मनोहरक मन अँटकल मुदा लगले घोड़ा जकाँ मन हिहिएलै- 'खगताकेँ जेते तक पचा सकब ओते पचाएब, आ बढ़ता-ले समाज अछि।'

दू-तिहाइ अंकक आशा नहियोँ देख मनोहरक मन मानि गेलै जे कोनो बेसी ओझरी नहियेँ अछि। मुदा तेसर प्रश्न- 'दरबज्जापर एक लोटा पानि' पर जखन नजैर पड़लै तँ मन ठमैक गेलइ। अपने घरसँ तीन घन्टाक रस्ता दूर रहब, दरबज्जापर बारह बजे दिन आकि बारह बजे राति जँ कियो आबि जाथि तखन अपना बुते की हएत? अखन माता-पिता जीबै छैथ तँ अपन दुआर-दरबज्जाक मुड़ेरा अकास ठेकेता मुदा परोछ भेला पछाइत की करबै? जँ अखन नै विचारि बाट पकैड़ लेब तँ बेर-बिपैत पड़लापर तँ सहजे लोकक बुधि हेरा जाइ छै, तखन केना विचारि पाएब..?

वस्त्रक एक-एक सूत बिलगा-बिलगा जखन मनोहर देखए लगल तँ बुझि पड़लै जे प्रश्न भारी कहाँ अछि। पीसक हले-हल बनबैक जन्मभूमि मातृभूमि भेल आ सेवाभूमि कर्मभूमि भेल। मातृभूमि कर्मभूमि होइत चलए तेतबे विचारैक अछि।

नोकरी भेलाक पनरह बर्खक पछाइत। मनोहरक माता-पिता मरि गेल छेलैन। अखन धरि मनोहर अठवारे गाम-अबै जाइ छल। गामक तसवीर तँ तेना भऽ नै सुधरल मुदा अपना घरसँ खा-पी कऽ बच्चा बी.ए. तक पढ़ि सकैए। घन्टा बीतैत-बीतैत डॉक्टर ओइठाम पहुँच सकैए। तखन गाम छोड़ब-तोड़ब नीक नहि। जहिना माता-पिताक समय अबै

जाइ छेलैं तहिना ऐगलो परिवार सेने रहब...। यएह सोचि मनोहर अपन परिवारकेँ गाममे रखलैन।

जोड़ा बरदक जोतबला परिवार सत्यदेवक छेलैन। ओना, जोड़ा बरदक जोतक अर्थ विकृत भऽ गेल अछि। विकृत ई भऽ गेल अछि जे साए-साए बीघा जमीनबला खुट्टा उसरन कऽ लेलैन। तर्क देता ट्रेक्टर-थ्रेसरक मुदा अपने परदेशसँ अगहने-अगहन गाम पहुँचता! से नहि, सत्यदेव मेहनती गिरहस्त छला। गिरहस्तीक सभ रूप सजौने छला। कलमी-सरही आमक गाछी पाँच कट्ठा अखनो छैन्हे। दू कट्ठा बँसबाड़ि, एक कट्ठा करजान, पाँच कट्ठा घराड़ियो छैन्हे। तीमन-तरकारीसँ लऽ कऽ बाड़ी-झाड़ी सेहो छैन्हे। पानिक अपन बेवस्था केनहि छैथ। तेतबे नहि, जेहने सासुक चालि-चलैन छेलै तेहने सुनयनोक भऽ गेलैन। गिरहस्तियोक काज सत्यदेवकेँ बँटाएले जकाँ रहैन। अढ़ाइ बीघा बाधक खेती अपन रहैन। तीमन-तरकारी, बाड़ी-झाड़ी आ फुलबाड़ी-फलबाड़ीक भार पत्नीपर रहैन। जे सुनयनाक हृदयक रूप बनि गेलैन। माने, सासु-ससुरकेँ परोछ भेने घरक सोल्हनी भार सुनयने उठा नेने छेली। सुनयनाक अभ्यन्तर कहैन जे ऐ घरक सोल्हन्नी कर्ता-धर्ता अपने छी। तेकरा जँ अपना जकाँ नै रखि बिनु आड़ि-मेड़क घर बना लेब तखन किए कहै छिऐ जे नारीक शोषण होइए। की एहेन नारी नै छैथ जे पुरुखसँ मालिश करबै छैथ? मुदा से नहि, ई भेल गप-सप्प...।

जिला कार्यालयमे की खाली सरकारीए काम-काज होइए आकि जिला भरिक कथा-कुटुमैती, गाए-बरद आ महींसक खरीद-बिकरीक संग राजनीति, कूटनीति, छलनीति, दुर्नित इत्यादि सभ कथुक जिला छीहे। भलैं कामकाजी लोक काजक औगताइमे तारिकोपर जेता मुदा पाछूसँ वारंट नेने औता। मुदा तेतबे तँ नइ अछि, कचहरी जाइ छी, भरि दिन केतए बैस समय गमाएब। तइसँ नीक किए ने पूर्बा हवाक गरपर बैस गाँजाक गन्ध पसाइर सभ गजेरीकेँ एकठाम समेटब नीक। एक चेहरा

अनेक रूप दुनियाँक नव हाल भइये गेल अछि। के अपराधी आ के अपराध रोकिनिहार? ई विचित्र स्थिति अछिए। जँ दू-तीन-चारिक जोगकेँ खिचड़ी कहब तँ चाउर, दूध, चीनी आ मसालाक जोग खीर केना भऽ गेल? जँ से नहि, चाउर-दालि आ अल्लू-पानिक बीच चीन्नियोँ दऽ दिऐ तखन की हएत..? तँए सोझहे नून-चीनीक बात नइ अछि।

सिंचाइ विभागक बड़ाबाबू छला जुगल किशोर। आब सेवा निवृत्ति भऽ गेला अछि। इलाकाक एक्के जातिक नहि, अधिकांश जातिक पजियारीक पेशा सेहो अपनौने छला। कार्यालय सभमे अहिना होइ छै एक चिन्हारे भेने तीन दिनमे हजार चिन्हरबा भऽ जाइ छइ। सरकारीए काजक भाषामे जुगल किशोर निपुण नहि, घटकैतीक भाषाक सेहो पाकल पड़ोर छला। हुनके भाँजमे मनोहर पड़ि गेला।

जखने जानकी एगारहम बर्ख टपि बारहममे पएर रखलक तखने सुनयना मनोहरकेँ जानकीक बिआहक भार सुमझा देलखिन। अखन धरि मनोहरकेँ कथा-कुटुमैतीक बोध नहि। भाँज लगलैन जे जुगल-किशोरक हाथमे छपड़िया पैकार जकाँ साइयो जोड़ा बरद-गाए रहिते छैन। जिला कार्यालयमे मनोहरकेँ अपन पहचान छेलैन। जइसँ काजक बोझो कम रहै छेलैन। एक दिन चारि बजे छुट्टी होइते जुगल किशोरसँ भेँट करैत मनोहर अपन बात जानकी बिआहक रखलैन। जेना जुगल किशोरकेँ जीए-पर रखल रहैन तहिना मनोहरकेँ कहलखिन जे कृष्णकान्त बी.ए. पास कऽ नोकरी-ले वौआइए, मुदा लेन-देन दुआरे काज नै भऽ पबै छइ। से जँ अहाँ अपनेसँ जा कऽ कहिऐन तँ ओहिना–माने बिनु लेन-देनेक–काज भऽ जेतैन आ अहूँकेँ बिआहमे लेन-देनक भार नै पड़त।

मनोहरक मन मानि गेलैन जे एक परिवारकेँ ठाढ़ होइक प्रश्न छै से जँ कहलासँ भऽ जेतै तँ उचित-उपकार दुनू भेल। अपनो काज ससैर जाएत। ओना, बीचमे एकटा बाधा ठाढ़ भेल, ओ ई जे पहिने नोकरी होइ आकि बिआह। घटकैती भाषमे जुगल किशोर कहलखिन-

"मनोहर बाबू, अहूँ सभ दिन कागतेमे ओझराएल रहलौं, एतबो ने बुझै छिऐ जे जइ घर बेटी जाएत तेकरा घरो ने छइ। दू-चारि मास कमा कऽ घर बनौत तखन निचेनसँ बिआह हेतइ। अखन एगारहे-बारहे बर्खक बेटी अछि, आब कि कोनो ओ जुग-जमाना रहलै, आब तँ बीस-बाइसक चलैन भऽ गेल अछि। नीको अछि।"

सोझमतिया मनोहर जुगल किशोरपर सोल्हनी बिसवास कऽ लेलैन। समय बीतैत रहल, बीतैत रहल...। मनोहर निचेन रहैथ जे बीस-बाइस बर्खक बीचक काज टरि गेल।

स्थायी रूपे जखन कृष्णकान्त बेवस्थित भेल तखन जुगल किशोर अपन बेटीक बिआह कृष्णकान्तसँ पाँच लाख नगद गनि करा लेलैन। कृष्णकान्तो अपन पूर्व जन्मक कमाइ बुझलक। एक पट्टीमे नोकरी, दोसर पट्टीमे पाँच लाखक संग कनियाँ। के हमरा सन भागमन्त हएत। जानकी जखन बाइसम बर्खमे पहुँचल, तँ सुनयना अन्तिम वारनिंग मनोहरकेँ देलखिन। तखन मनोहरकेँ चाँकि जगलैन। धर्म-कर्म बुझि मनोहर जुगल किशोरक गाम पहुँचला। तीन साल पहिने जुगल किशोर सेवा-निवृत्त भेले रहैथ। दरबज्जापर बैसल जुगल किशोरक मन मनोहरकेँ किछु मोट बुझहेलैन। मुदा अपन काज तँ पहाड़ी इलाकामे लोक गदहो चढ़ि कऽ लइए। खाएर, हमहूँ कोनो कुटुमैती करए थोड़े एलौं जे मान-रोख रखब। काजे एलौं काज करब जाएब तैबीच समैये करखन बँचत जे पहुनाइ करब। बुढ़ियो बाघीन तँ फेर बाघीन छिऐ किने। मनोहरकेँ देखते जुगल किशोर चपाड़ा दैत अभिवादन केलकैन-

"आउ-आउ मनोहरबाबू! आब तँ भेँटो दुरलव, केमहर-केमहर..?"

मनोहर कहलकैन-

"जानकी बाइस बर्खक भऽ गेल, सएह काजे आएल छी।"

अखन धरि मनोहरकेँ नै बुझल जे कृष्ण कान्तक बिआह जुगल

किशोरेक बेटीसँ भऽ गेलैन। मुदा ई दुनियाँक खेल छी जे दुनियाँमे रहितो लोक दुनियाँकेँ नै जानि पबैत अछि।

जुगल किशोरक मनमे भेलैन जे मास दिन पहिनहि काज भेल आ आइ ई ताना-मारए दरबज्जापर चलि एला! अपना सीमा कुकुरो बताह। जुगल किशोर सोझहे कहलखिन-

“ऐठामसँ चलि जाउ, नै तँ पुलिसकेँ बजाएब!!”

ओना, जुगल किशोरक बात मनोहरकेँ तेते कठाइन नै लगलैन जेते लागक चाही। किएक तँ अपन दरबज्जापर उचित-अभ्यागत-ले पुलिस आनी, सएह तँ मिथिलाक दरबज्जा छी।

पुलिसक नाओं सुनि मनोहर भरमे-सरमे घरमुहाँ भेला।

तही दिनसँ ऑफिसक काजमे मनोहरकेँ उन्टा-फेड़ हुअ लगलैन। जइसँ पागल घोषित कऽ देल गेला।

❑ **साभार : उलबा चाउर**

# भोलानाथ बाबा

अन्तिम जेठ, काल्हि सौंझुका बरखा तेहेन भेल जे मौसमोमे बदलाहट आएल आ धारो सभ फुलाए लगल। ओना, दूटा बरखा पहिनौं भेल छल, ई तेसर बरखा जेठक छेलै, जइसँ जे धार आर्द्राक ओद्रसँ निकैल फुलाइ छल ओ अनुकूल मौसम पाबि अगते फुला गेल। होइते अहिना छै जे जँ समयकेँ अनुकूल बनैसँ पहिने अनुकूल वातावरण बनि गेल तँ ओइमे अनुकूलता स्वत: आबए लगै छइ, सएह भेल।

..अनुकूलता ई भेल जे पहाड़ी धार हौउ आकि तराइ इलाकाक, बर्खाक पानि पबिते फुला जाइए, सएह भेल। नेपालसँ लऽ कऽ दूर-दूर तक तराइ इलाकामे तेते बर्खा भेल जे धारक संग-संग मौसमोमे बदलाहट आबि गेल।

सालोक संजोग नीक रहल, जहिना अगहनमे धनमण्डल धान भेल तहिना चैतमे दलिहनो आ गहुमो भेल। तैसंग आमो-जामुन तेते फड़ल जे ऐ बेर कौओ-कुकुरक मन अघेबे करत। जहिना आमक फड़ी तहिना जामुनक फड़ी लगने छोट-छोट गाछक कोन बात जे बड़को-बड़को गाछक डारि सभ धरती दिस झूकि कऽ निच्चाँ-मुहेँ भऽ गेल। छोट-छोट आमक गाछमे तँ बाँसक सोंगरो लोक लगौलक मुदा नमहर गाछमे सोंगर केना लगौत, तँए ओ ओहिना रहि गेल। जामुनक गाछकेँ तँ बेसी फड़नौं,

फड़ छोट भेने, सोंगरक खगते ने होइ छै जे सोंगर कियो लगौत। ओना, आमक गाछ आ जामुनक गाछक लकड़ियोमे अन्तर होइते अछि जइसँ लकड़ीक गुणोमे अन्तर होइते अछि। जइसँ जेते भार उठबैक शक्तियो मजबुतियो जामुनक गाछकेँ होइ छै तइसँ कम शक्ति आमक गाछकेँ होइ छइ। मुदा तैसंग एकटा कुभाँजो तँ ऐछे। कुभाँज ई जे तगतगर जामुनक गाछकेँ होइतो फड़ छोट होइ छै आ आमक गाछमे नमहर फड़ होइए...।

बेरुका समय, भोला नाथ बाबा दुपहरिया सूतबसँ उठि मुँह-हाथ धोइ, पानि-चाह पीब दरबज्जाक ओसारक कुरसीपर बैस अपन पचासी बर्खक बीचक आजुक दिनपर मने-मन विचार करए लगला।

बेर झुकने सुरूजो पच्छिम-मुहेँ झूकि पछबरिया रस्ता पकैड़ नेने आ पुरबा हवा अपन रस भरल चालि पकैड़ रसे-रसे चलि रहल अछि।

पनरह गोरेक परिवार भोला नाथ बाबाक छैन, जइमे सभसँ श्रेष्ठ अपने छैथ, से दुनू मानेमे परिवारमे श्रेष्ठ छैथ। पहिल जे बाबाक सीढ़ीपर छैथ आ दोसर पचासी बर्ख बितौल जिनगियो छैन।

आइक परिवार मनमे अबिते भोला नाथ बाबाक पहिल नजैर पत्नीपर गेलैन। ओना, साले भरिक छोट पत्नी छथिन, मुदा काजमे केतौ साल भरिक छोट, तँ केतौ पचीस-पचास सालक छोट छथिन। माने ई जे किछु काज भोला नाथ बाबाक बहुत अगुआएल छैन मुदा पत्नी ओइ काजमे बहुत पछुआएल छथिन। ओना, किछु छथिन मुदा पैंसैठ-छियासैठ बर्खसँ संगी बनि संग-संग चलि तँ आबिए रहल छथिन।

पत्नीपर नजैर पड़िते भोला नाथ बाबाक मन मधुएलैन। मधुआइते मन मुस्कियेलैन। मुस्की भरैत बुदबुदेला»

“तुलसी ऐ संसारमे भाँति-भाँतिक लोक...।”

मुहसँ तँ निकैल गेलैन मुदा मने-मन जखन विचार करए लगला तखन एकटा काज मन पड़लैन। मन पड़िते मुहसँ फुटलैन»

"कहू जे ई केहेन भेल!"

..भेल ई रहैन जे पोता मोटर साइकिल किनलकैन। नव रहने झलकैत रहबे करइ। मधुबनीसँ आनि दरबज्जाक आगूमे लगौलक। गाड़ीसँ उतैर दरबज्जेपर सँ दादीकेँ ई सोचि शोर पाड़लक जे गाड़ी देख मन खुशी हेतैन, असिरवाद देती। जखने दादीक असिरवाद भेट जाएत तखने बबोक असिरवादक मिनहा भइये जाएत आ आरो जे सभ परिवारमे छैथ, माने माता-पिता, काका-काकी ओ नीक छोड़ि अधला बात बाजिए ने सकै छैथ। खुशीए-खुशी परिवारमे हएत। यएह ने भेल परिवार आकि समाजक काज जइसँ सभ एकमुहरी अनुकूल वा खुशीक नजैरसँ ओइ काजकेँ देखए।

दरबज्जाक आगूमे गाड़ी ठाढ़ कऽ 'दादी-दादी' बजैत राम किशुन आँगन आबि दादीकेँ गोड़ लागि बाजल»

"दादी, गाड़ी कीनि कऽ अनलौं हेन?"

गाड़ीक नाओं सुनिते दादीक मन खुशीसँ खुशिया लगलैन। ओसारपर सँ उठि सोझे दरबज्जापर आबि गाड़ी देख बजली»

"ताबे निच्चेमे रहए दहक... ।"

कहि पार्वती चोट्टे आँगन घुमि सिदहा नापैबला तम्मामे धान लेलैन, हाँइ-हाँइ कऽ चारिटा दुभि सेहो नोंचि अनलैन आ पुतोहुकेँ कहलखिन»

"कनियाँ कनी पीठार पीसू।"

सासुक आदेशे पुतोहु सुखले अरबा चाउरकेँ पानि दए-दए पीठार पिसलैन।

सिनूर-पीठार आ दुभि-धान नेने पार्वती लोहाक गाड़ीकेँ बाहर पुइज घर प्रवेशक आदेश देलखिन। ओना, भोला नाथ बाबा सेहो दरबज्जापर बैसल दादीक सभ लीला देखलैन मुदा बजला किछु ने। मुदा मनमे एते उठबे करैत रहैन जे एक परिवार रहितो कियो अपना मनक

धारमे भँसिया रहल अछि तँ कियो जीवनकेँ धार बुझि पार होइक ओरियान कऽ रहल अछि।

..मुदा लगले दादीक ओ रूप सोझहामे आबि गेलैन जे संग मिलि केहनो रौद रहौ कि बरखा हौउ आकि जाड़े-ठाढ़ रहौ, एते तँ गुण छैन्हे जे जाधैर काजमे जुटल रहै छी ताधैर पार्वती सेहो समयकेँ बिनु ठेकनौनौ जुटल रहै छैथ। यएह ने भेल संगीक संगपना, जे गुण पार्वतीकेँ शुरूहेमे धेलकैन से अखनो धेनहि छैन। ओना, उमेरोक हिसाबे आ समैयोक हिसाबे काज बदैल गेल छैन, मुदा काज करैक जे उत्साह आ जिज्ञासा शुरूसँ धेलकैन ओ अखनो धेनहि छैन।

पत्नीपर सँ नजैर उतैर भोला नाथ बाबाकेँ अपनापर एलैन। अपनापर अबिते मन ठमकलैन। मुदा ठमकला कनीए कालक पछाइत मन घुसैक कऽ शासन आ सत्ता दिस बढ़ि गेलैन।

सत्ता दिस नजैर बढ़िते हँसी लगलैन। हँसी ई लगलैन जे जइ सत्ताक पाछू पत्र-पत्रिका, रेड़ियो, टी.भी, इन्टरनेट सभ सहयोगी अछि तैठामक आम-अवामक जे समस्या अछि आ सरकारक जे समाधान छइ, से लोक बुझिए ने रहल अछि जइसँ ओकर लाभ उठौत। मनमे अबिते भोला नाथ बाबा गुनधुन करए लगला जे एना किए भऽ रहल अछि? एक दिस देखै छी जे धिया-पुताक कलम-किताब आ स्कूलक बैग तकक माध्यमसँ प्रचार भऽ रहल अछि आ दोसर दिस सभ शून भेल बैसल अछि। मुदा लगले भोला नाथ बाबाक मन उचैट कऽ फेर अपनेपर आबि गेलैन। अपनापर अबिते बुदबुदेला»

“जानए जअ आ जानए जत्ता। जखन राज सत्तासँ कोनो मतलब नइ अछि तखन ओइ पाछू माथे धूनब फाजिल हएत। जँ एते माथ अपना-ले धूनब तँ अपनो कल्याण हएत, परिवारो-समाजक हेतइ आ देशो-दुनियाँक हेतइ। पाँच बीघा जमीन अछि, जेकर मालगुजारी

सरकारकेँ दइते छिऐ, ओही जमीनक ने उपजा-बाड़ीसँ अपनो आ परिवारो ठाढ़ अछि। जँ कनियोँ नजैर सरकार आकि सत्ताक रहैत तँ ओहो ने अपन देशक सम्पैत बुझि सहयोग करितए, सेहो तँ नहियेँ अछि। लऽ दऽ कऽ पाँच बीघा जमीनक माटि अछि, जेकरा उपजबै-ले पटौनीक संग-संग नीक बीआ, नीक खादक खगता अछि, से पुरौनिहार के अछि। जखन अपने केने होइए तखन अनकर भरोसे केते। सहजे तँ इनारेमे भाँग घोरा गेल अछि तखन तँ जीविते छी सहए बहुत भेल।”

सितम्बर 1929 ईस्वीमे भोला नाथक जन्म एकटा साधारण किसान परिवारमे भेलैन। गाममे तँ लोअरे प्राइमरी धरिक स्कूल, मुदा कोस भरि हटि दोसर गाममे मिड्ल स्कूल रहइ। गौरी नाथक बहुत इच्छा रहैन जे बेटाकेँ पढ़ा-लिखा एक सुशिक्षित नागरिक बनाबी मुदा अंग्रेजी शासन रहने विचारमे बाधा रहबे करैन। पाँच बर्खक पछाइत भोला नाथकेँ पिता स्कूलमे नाओं लिखा देलखिन। साले-साल आगू बढ़ैत भोला नाथ सतमामे पहुँचल।

1942 ईस्वी। अंग्रेजी शासनक खिलाफ गामे-गाम आन्दोलन पसैर गेल। जइ स्कूलमे भोला नाथ पढ़ै छला, ओइ स्कूलमे पाँचटा शिक्षक, जइमे चारि गोरे तँ अपनाकेँ शिक्षक बुझि आन्दोलनसँ हटल रहला मुदा पाँचम– देवकान्त बाबू आन्दोलनमे कुदि पड़ला। जखन सौंसे देशक लोक अपन-अपन स्वतंत्रताक भागीदारी दर्ज करा रहला अछि तखन हमहूँ तँ अही गुलाम देशक एक पढ़ल-लिखल नवयुवक छी। कहिया-ले ई जुआनी राखब। ..यएह सोचि देवकान्त बाबू अजादीक आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

दस-बारहटा स्कूलक विद्यार्थी सेहो संग देलकैन। मुदा जहिना रामकेँ बानर-भालू संग देने रहैन तहिना देवकान्तो बाबूकेँ बाल-बोध संग देलकैन। ओना, गामे-गाम आन्दोलन पसरल रहबे करइ तँए संगीक अभाव नहियेँ रहैन।

..ओही समयमे भोला नाथ दसो-बारहो विद्यार्थीक संग अजादीक

आन्दोलनमे आगू बढ़ला।

जहिना कोनो तीर्थ-व्रत करैले लोक संगी भँजियबैए तहिना देवकान्त बाबू सेहो नजैर खिड़ा भँजियौलैन। गाममे गाँधीजी आन्दोलनक ऐगला बाहन रहैथ। ओना, गाँधीजीक असल नाओं रघुनन्दन रहैन जे 1921 ईस्वीमे गाँधीजीक नाओं सुनि आन्दोलनमे कुदल रहैथ।

1934 ईस्वीमे जबरदस भुमकम भेल छल, जहिना 1988 ईस्वीमे भेल तहूसँ नमहर। केतेको लोक मरल, केतेको घर-दुआर खसल, केतेको नीक खेत बाउलसँ बलुआहा खेत बनि गेल। ओही भुमकममे जे सहयोग-ले अन-पानि कपड़ा-लत्ता, गाममे भेटलैन, ओइ सहयोगकेँ तेते इमानदारीसँ रघुनन्दन बँटलैन जे गामक लोक 'गाँधीजी' कहए लगलैन। ओना, जेते भुमकम पीड़ित गाम छल, अकसरहाँ गामकेँ सहयोग भेटल, मुदा गामक जे अगुआ सभ छला ओ आधा-छिधा बँटबो केलैन आ आधा-छिधा अपनो रखि लेलैन।

ओना, जखन देवकान्त बाबू आनन्दोलनक संकल्प मनमे रोपि विद्यालय छोड़ि विदा भेला तखन चारू शिक्षक, जे आन्दोलनमे नइ बढ़ला, देवकान्त बाबूकेँ मनाही केलकैन जे नइ जाउ। मुदा किनको बात नहि सुनि देवकान्त बाबू विद्यालयसँ निकैल गेला, जिनका संग दस-बारहटा विद्यार्थी सेहो देलकैन। जइमे भोला नाथ सेहो छल।

विद्यालयसँ निकैल दसो-बारहो विद्यार्थीक संग देवकान्त बाबू एकटा आमक गाछक छाहैरमे बैस विचार करए लगला। विचारमे एलैन जे जइ बाल-बोधकेँ संग नेने जा रहल छी, ओ मनसँ जा रहल अछि आकि होहामे जा रहल अछि। तँए सबहक मनक बात बुझैले एका-एकी

सभकेँ पुछलखिन। उत्साहित बाल-बोध सभ हँ-मे-हँ मिला देलकैन। हँ-मे-हँ मिलिते देवकान्त बाबूक मन कलशलैन। कलशलैन ई जे ऐ जत्थाक नेतृत्व करैक भार ऊपर आबि गेल। आब तँ अपने ने विचार करए पड़त जे केतएसँ शुरू करब? ..मन ठमकलैन, ठमैकते आन्दोलनक सीमांकन केलैन। एक दिस दिल्लीक गद्दी आ दोसर दिस गाम-गामक लोकसँ लऽ कऽ खेत-पथार धरि दाबल अछि। तैठाम जँ गामक लोक गामसँ आन्दोलन शुरू नइ करत तखन तँ गामे छुटि जाएत। गामे-सँ-गाम जोड़ि ने जिलो-जबार आ राजो-देश बनल अछि।

देवकान्त बाबू दसो-बारहो आन्दोलनकारी सभकेँ संग नेने गाँधीजी माने रघुनन्दन ऐठाम पहुँचला। पनरह-बीस गोरेक संग गाँधीजी आन्दोलनेक विचार कऽ रहल छला। कियो रेलवेक पटरी उखाड़ैक विचार दइ छेलैन, तँ कियो पोस्ट ऑफिसमे आगि लगबैक, कियो गोरा-सिपाहीक रस्ताकेँ अवरूद्ध करैले पुल तोड़ैक विचार दइत रहैन...। मुदा जाबे कोनो एकमुहरी विचार नइ भऽ जाएत ताबे आगू केना बढ़ल जा सकैए। ..अही गुनधुनमे सभ कियो विचार करिते छला कि देवकान्त बाबू अपन जत्थाक संग पहुँचला।

बाल-बोधक जत्था देख सभ आन्दोलनकारी खुशियो भेला आ छगुन्तोमे पड़ला। खुशी ई भेला जे जखन कोनो देशक बच्चा-बच्चा अपन देशक गरिमा बुझत तखन ओ देश अजादक कोन बात जे एक सुसम्पन्न देश सेहो बनबे करत। आ छगुन्तामे ई पड़ला जे बाल-बोध केना पैघ-सँ-पैघ यातना सहि सकैए! गाँधीजी देवकान्त बाबूकेँ पुछलखिन»

“देवकान्त बाबू, समाजक पढ़ल-लिखल लोक तँ अहीं सभ छी, केना आगूक कार्यक्रम बनाएब?”

गाँधीजीक प्रश्न सुनि देवकान्त बाबू ठमकला, मुदा ई जगह तँ कोनो प्रश्नक निर्णायक उत्तर दइबला नइ छी, अपन विचार रखैक छी, जे

निर्णायक दौड़मे अछि। ..देवकान्त बाबूक नजैर तखन भोले नाथपर रहैन। हीगर-पुष्टगर भोला नाथ रहबे करए। ओना, छल बारहे-तेरहे बर्खक मुदा रहए कलशगर। सदिकाल कानो आ कन्हो उठौनहि रहै छल। देवकान्त बाबू बजला»

"जखन अंग्रेजी शासन तोड़ए चाहै छी तखन ओकर डारि-पात

सभकेँ तोड़ए पड़त। नइ तँ जहिना कोनो बर-पीपरक गाछकेँ जड़ि काटि खसा देबइ आ ओकर डारि-पात, फूल-बीआ रहबे करतै तखन तँ ओ फेर गाछ हेबे करत।"

देवकान्त बाबूक विचारपर सभ बुजुर्ग आन्दोलनकारी विचार करए लगला। अन्तो-अन्त विचार भेल जे गाँधीजीक मुहेँ बजौल गेल»

"पहिने थानाक चौकी जे चौकीदारक जिम्मामे छइ, ओकर बरदी-मुरेठा छीनि कऽ आइ जरा देब अछि।"

गाँधी जीक संग सभ कियो विदा भेला...।

गाममे दूटा चौकीदार दुनू गामेक। दुनू गोरेकेँ भाँज लगि गेल जे बरदी-मुरेठा जरबैक विचार आन्दोनकारी कऽ लेलक अछि। दुनू चौकीदार विचारलक जे अनेरे गौंआँ हाथे मारियो खाएब आ समाजिकता सेहो टुटत, तहूमे अंग्रेजी सरकार कि अपना देशसँ रूपैआ आनि दरमाहा दइए। ओकर कि कोनो नून-हरदी खाइ छिऐ। गौंएँ ने आठअना-एक-रूपैआ चौकीदारी दइए जइसँ पनरह-पनरह रूपैआ दुनू गोरेकेँ दरमाहा भेटैए। खाली बरदी देने अछि आ लऽ दऽ कऽ चारि हाथ मुरेठाक कपड़ा देने अछि। ..किए ने अपन समाजिकता राखब। सएह केलक।

ओही मुरेठा जरबैक घटनामे देवकान्तो बाबू आ भोलो नाथ जहल गेला। पहिल बेर, देवकान्त बाबू सन 1942 ईस्वीमे तीन बर्ख धरि जहलमे रहला आ भोला नाथ छबे मासमे नवालिक दुआरे छुटि कऽ एला।

भोला नाथक जिनगी सन 1942 ईस्वीक आन्दोलनसँ शुरू भेल समाजसँ अपन अलग रूपमे अपन जिनगीक क्रिया-कलाप अपनौलैन। आन्दोलन बढ़ैत गेल, भोला नाथक जहल यात्रा सेहो बढ़ैत गेलैन। देशक सत्ता विदेशीसँ देशीक हाथमे आएल। आने जकाँ भोलो नाथ स्वतंत्र देशमे साँस लेलैन।

ओना, अजादीसँ पूर्ब आ 1942 ईस्वीक बीच भोला नाथ आरो तीन बेर जहल गेल छला। समाजोक बीच विचारमे बदलाव आबि चुकल छल। बदलाव ई जे अखन तक समाजमे एहेन धारणा बनल छल जे जहल जाएब पाप छी आ पापीए-ले जहल अछि, माने जे पाप करैए सएह जहल जाइए।

तीन भाए-बहिनक बीच भोला नाथ। दू बहिनक बीच जेठ भोला नाथ। पिता गौरीनाथकेँ पुश्तैनी पाँच बीघा जमीन। समयानुसार जिनगी बना परिवारकेँ अखनो ओहिना जीवित रखने छैथ जहिना बाबाक अमलदारीमे रहैन।

देशक बीच अजादीक विर्ड़ो उठल, गाम-गामक नवयुवको आ समझदारो सभ आन्दोलन कऽ रहला अछि तँए कहियो भोला नाथकेँ पिता ई नइ कहलखिन जे बौआ आन्दोलन अधला छी...।

नव उमेरक भोला नाथक मनमे बैस गेल छल जे आन्दोलनेसँ अजादियो भेटत आ अजादीक पछाइते अजाद भऽ कियो अपन जिनगीकेँ अजाद बनौत। तैसंग जहलमे ईहो आन्दोलनकारी सभसँ सीख नेने छला जे अपन देश आइए नइ बहुत दिनसँ गुलामीक शिकंजामे कसल आबि रहल अछि। गुलाम देशक आम-अवामक जिनगीकेँ तोड़ैत-तोड़ैत एते तोड़ि देल जाइए जे मनुखक जिनगीकेँ पशुवत बना दइए। जइसँ चीन-पहचीन रहिए ने जाइए।

भोला नाथ जखन उन्नैसम बर्खमे पहुँचल तखन गौरीनाथ

कहलखिन»

“बौआ, आब तँ हमहूँ चारिमे सीढ़ीमे पहुँचब, दुनू बेटीक बिआह भइये गेल, माता-पिताक जिनगीक अन्तिम क्रियो-कर्मसँ निवृत्त भइये गेल छी, खाली तोरे बिआह-टा पछुआएल अछि।”

पिताक विचारकेँ स्वीकार करैत भोला नाथ बाजल»

“बाबू, परिवारक जे ढर्रा बनि गेल अछि तइ अनुकूल मानि गेलौं

मुदा परिवारक संग समाजोक सेवा करबे करब।”

बेटाक विचारसँ सहमत बनबैत गौरीनाथ बजला»

“जाबे जीबै छी ततबे दिन ने, मुदा पछाइत तँ अपने निमाहए पड़तह।”

ओना, अखन तक परिवारक कोनो भार भोला नाथक ऊपर नइ पड़ल छल तँए भारक-भारीपन बुझबे ने केलक आ बाजल»

“बड़ बढ़ियाँ।”

भोला नाथक बिआहो भेल।

जहलमे एते भोला नाथ बुझि गेल छल, पैघ-पैघ विचारकक विचार सुनि, जे पहिने परिवारसँ गाम, गामसँ जिला-जबार होइत राज्य-देशकेँ जानब अछि, तइले अध्ययनो आ देशाटनो जरूरी अछि। तहूमे पिता जीवित छैथ तँए अखन मौका अछि। सएह केलैन।

जहिना कोनो तीर्थ स्थानक कियो तीन-पेखैन करैत तहिना भोला नाथ सौंसे देशकेँ तीन बेर भ्रमण करैत देशक समाजिक आर्थिक अध्ययन देखियो कऽ आ किताबो पढ़ि कऽ बहुत किछु जानि चुकल छला।

दस बर्खक पछाइत माता-पिताक अन्त भेलैन। परिवारक भार भोला नाथकेँ अपना ऊपर ओइ रूपे आएल जे पिताक अमलदारीमे पाँच गोरेक परिवार छेलैन जे अखन  छअ गोरेक भऽ गेल अछि।

देशक संग गामोक दशा पछुआएले छल। ने खेती-बाड़ीक समुचित बेवस्था आ ने पढ़ै-लिखैक स्कूल-कौलेजक सुविधा आ ने बर-बेमारीक इलाजक समुचित सुविधा। ओना, लहेरियासराय अस्पताल आ ठाम-ठाम स्कूलो-कौलेज खुजि गेल, मुदा आवश्यकतानुकूल नहि।

अपन पाँचो बीघा जोतसीम जमीनकेँ भोला नाथ एकठाम केलैन। माने गौंआँ सभसँ अदैल-बदैल, एकटा बोरिंग गड़ा खेतक पानिक सुविधा बनौलैन। एक जोड़ बरद आ एकटा महींस सभ दिने परिवारमे रहलैन जेकरा समुन्नत बनौलैन। समुन्नत ई जे महींसक सेवासँ कम्मो सेवामे गाइक सेवा होइ छइ, परिवारमे जेते करताइत अछि तही हिसाबसँ ने परिवारक काज ठाढ़ हएत। ..काज करैबलाक हिसाबसँ अपन काजक रूप-रेखा बना भोला नाथ काजकेँ बदलबो केलैन आ निरमेबो केलैन।

समैयक संग अपन जिनगीकेँ ताल-मेल बैसबैत परिवारक गाड़ीकेँ भोला नाथ खिंचए लगला। खेती-पथारी आकि कोनो आमदनीक जड़ि समैयक अनुकूल घटौलो-बढ़ौलो जा सकैए। मुदा मनुखक जनमसँ लऽ कऽ धरम-करम धरिक जिनगियो तँ परिवारेमे सृजित होइए। तइमे भोला नाथ बाबा स्वतंत्र देशक, स्वतंत्र जिनगीक संग जीविए रहला अछि।

❑ **साभार : गुलेती दास**

# घटक बाबा

एहेन अगियाएल क्रोध घटक बाबाकेँ जिनगीमे पहिल दिन छेलैन जेहेन आइ भोरे उठलैन। एक तँ औहुना देह घटने थोड़-थाड़ क्रोध सदिखन रहबे करै छैन मुदा घटबी जिनगीमे घटती काज भेने जहिना होइ छै तहिना भेलैन। ओना, देहक घटबी अनका जकाँ नइ रहैन, किएक तँ सभ दिन रहने केकरो फेहम बनल रहै छै, सभ किछु दुरुस्त रहै छै, मुदा तइसँ भिन्न घटक बाबाकेँ भेलैन। जेना केरा गाछक वा अनरनेबा गाछक पानि सुखने खलपैट जाइए तहिना भेने घटक बाबाकेँ घरक पहिलुका सभ कपड़ो-लत्ता आ जुतो-चप्पल भऽ गेलैन। दहेजुआ देल कुरतो-गंजी आ जुत्तो-पप्पल ढिल-ढिलाह बनि गेलैन। एकर माने ई नहि जे कुरतो-गंजी आ जुतो-चप्पल बढ़ि कऽ ताड़ भऽ गेलैन तँए ढिल-ढिलाह भऽ गेलैन। अपने सुखि कऽ पलास भऽ गेल छैथ। ओना, घरमे तेते-रास कपड़ो आ जुत्तो-चप्पल छैन जे अपन जीता-जिनगीकेँ के कहए जे मुइलोपर दान-पुन करैत उगड़िए जेतैन। मुदा कुछप भेने ओहो सभ कुछपिये जेतैन जइसँ कोनो सोगात नै लगतैन। जँ अपनो पहिरता तँ लेबरे जकाँ लगता आ दानो-पुन करता तैयो सएह हेतैन। खाएर जे हौउ, मुदा औझुका अगियाएल क्रोध बिनु हवोक ने पजैर जाए तेहने लहलही छैन।

कनभेंटक सातम श्रेणीक पोती–सरस्वती–जिज्ञासु बनि पुछलकैन-

"बाबा, पढ़ल-लिखल लड़काक संग बिनु पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआह केते करौलिऐ आ बिनु पढ़ल-लिखल लड़काकेँ पढ़ल-लिखल लड़कीक संग केते करौने हेबइ?"

पोतीक पुछल प्रश्नक उत्तर बाबा नकारि केना सकै छैथ। कविताक तुकबन्दी जकाँ भलेँ कुछप किए ने हौउ, मुदा लय तँ भरबे करता...।

छ-अनियाँ मुस्की दैत घटक बाबा कहलखिन-

"कोनो की डायरी लिखि कऽ रखने छी, अनगिनती बुझह।"

बाल मन सरस्वतीक, अनगिनतीमे ओझरा गेल। मुदा जहिना भूखक तृष्णाकेँ पानियोँसँ किछु समय बिलमौल जा सकैए, मुदा तृष्णो तँ तृष्णा छिऐ। ठोस जहिना पानिमे नै भँसियाइत, पानि हवामे नै उड़ैत तहिना सरस्वतीक तृष्णा नइ उड़ल। पुन: दोहरा कऽ बाजल-

"बाबा, बिआह किए होइ छइ?"

पाँच किलो मोटरीकेँ तँ टारि देलिऐ, मनहीकेँ केना टारबै? जहिना पएर पड़िते साँप फन-फना उठैए तहिना घटक बाबाकेँ फनफनी उठलैन। एक तँ औहुना घटबी देह थरथराइते रहै छैन तैपर आरो पकैड़ लेलकैन। मुदा जहिना गनगुआरि देख नागक फनकी टुटि जाइत, तहिना दस बर्खक पोतीकेँ सोझहामे ठाढ़ भेने घटक बाबाकेँ भेलैन।

**❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता**

# इजोरिया राति

साढ़े पाँच बजे भोरे पिताजीक फोन पहुँचल। रिसिभ करैत प्रणाम केलिऐन। प्रणामक जवाब दैत पिताजी कहलैन-

"दादी कहै छथुन जे जाबे बेकलाक मुँह नइ देखब ताबे परान नइ छूटत।"

'बड़बढ़ियाँ' कहि पिताजीकेँ जवाब देलिऐन। मोबाइल रखिते मनक मोबाइल टनटनाएल। मनमे उठल दादी-माँ। ओही दादीक मुँहक बात आ हाथक काज देख आइ केरल सन पैघ शहरमे प्राइवेट ट्रान्सपोर्टक ओहन नोकरी करै छी जइमे सभ सुविधा मौजूद अछि! प्लेनसँ पटना होइत आइए गाम पहुँच जाएब। मुदा...।

लगले मन बदैल गेल, बदैल ई गेल जे जखन दादीक वचन छैन जे तोरे मुँह देखै दुआरे प्राण अँटकल अछि, तँ दू-चारि दिन देहेक कष्ट ने हेतैन, मनक तँ नइ हेतैन, दू-चारि दिनक पछाइते गाम जाएब। हँ-निहँस नीक जकाँ केनौं ने रही कि फेर मनमे उठि गेल- औझुका काज, औझुका रूटिंग। नहा-धो कऽ कपड़ा पहीरि चाह पीब, समुद्रमे बनल विवेकानन्दक स्मारक देखए अठबारे सभ रबिकेँ जाइते छी, ओकरे तैयारीमे रही आकि तखने गामसँ फोन आएल छल। उठि कऽ विदा होइक विचार मनमे उठबे कएल कि अगुआ कऽ उठि गेल- गाम जाएब।

केकरो किछु कहैक जरूरत ऐछे नहि, आठ बजेक प्लेन पकैड़ लेब, सोझहे पटना दस बजे पहुँचा देत, दू-अढ़ाइ घन्टामे पटनासँ गामक सीमान तक बस पहुँचा देत, जँ ओतएसँ पएरो जाएब, तैयो दिन लहसैत आइए गाम पहुँच जाएब। सएह केलौं।

ठीक दस बजे पटना हवाइ अड्डापर पहुँच गेलौं। पहुँचते विचार भेल जे बिनु पुछने-कहने गाम विदा भऽ गेल छी, गाम तँ गामे छी, अंगदक लंका। जे जाएब तँ असान अछि मुदा घूमि आएब कठिन। एक-दू दिनक बात रहैत तखन तँ अगर-मगर करैत छुट्टियो बँचा लितौं। मुदा तहूमे मैयाँसँ अन्तिम भेँट छी।

समय बेठेकान अछि। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अदहा रस्तासँ बेसी दूर पहुँचिये गेल छी, कहबैन जे पटना काजे आएल छेलौं, घूमि कऽ अखन केरल नइ आएब, गाम जाएब जरूरी भऽ गेल। दादी-माँ चलचलौ भऽ गेली अछि। ओना, उमेरो भइये गेल छैन, झुनकुट बुढ़ भइये गेल छैथ।

स्टेशनसँ निकैल मुसाफिरखनासँ पहिनहि अपन कम्पनीक मालिककेँ फोनसँ सूचित केलौं। पछाइत गामक नम्बर मिला फोन लगेलौं। भैया फोन उठौलैन। प्रणाम करैत पुछलयैन-

“भैया, की समाचार अछि, दादी-माँ केना छैथ?”

भैया जवाब देलैन-

“सभ पूरबते अछि। दादी-माँ सँ गप करह।”

गोड़ लगैत दादी-माँकेँ पुछलयैन-

“मन नीक अछि किने, दादी-माँ?”

जेना ठोरेपर जवाब लटकल रहैन तहिना उत्तर देली-

“बौआ, पहिने गाम आबह तखन निचेनसँ गप करब।”

कहलयैन-

“पटना पहुँच गेल छी, कनीयेँकालक पछाइत गाम पहुँच जाएब। की सभ खाइ-पीबैक मन होइए कहू कीनने आएब।”

जवाब देली-

“सब दिन अपना हाथक खेलौं, आब ऐ उमेरमे अनका हाथक खाएब! किछो ने अनिहह। अपने सब किछु अछि।”

दादी-माँक जनम ओहन परिवारमे भेलैन जे जाति विभाजित समाजमे विभाजित जातिक बीच जातिक उच्च कोटिक परिवार छेलैन। एक शाखाक बीच अखन सात डारिमे विभाजित समुदाय अछि। माने एक जातिक बीच सात जाति बनि ठाढ़ अछि, जइमे एक-दोसरक बीच काफी दूरी बनियोँ गेल अछि आ बनियोँ रहल अछि। जेकर एलेक्शने-एलेक्शन रिनुअलो होइते अछि। अहुना समाजिक स्तरपर खान-पानक बीच छुआ-छूत अछिए।

दादी-माँक पिता शिक्षक। ओइ समैयक शिक्षक जइ समयमे खाली पेट भरि खेनाइटा होइ छेलैन। जखन कि परिवारो समटले, छबे गोरेक परिवार रहैन। परिवारमे असगरे काजकर्ता पुरुख पिता रहैन, बाँकी पाँचो या तँ महिला छेलैन या तँ बाल-बच्चा। ओना, पान-सात बीघा खेतो रहैन मुदा मालगुजारीक अभावमे केता बेर निलाम होइत रहलैन। मुदा शिक्षकक रूपमे जुरमाना माफ करैत आपस कऽ देल जाइ छेलैन।

दादी-माँक पिता घरसँ बाहर रहने ने माल-जाल खुट्टापर पोसने रहैथ आ ने खेती-पथारी अपना सिरे करै छला। कहैले बँटाइ लगौने रहथिन मुदा बँटाइयो तँ बँटेदार किसान आ बँटाइ लगौनिहार मालिकक बीचक कारोबार छी। तँए जेहेन जे बँटेदार किसान तेहेन तेकरा लाभ।

मास्टर साहैब सोझमतिया लोक, जे-जे बँटेदार कहैन- माने रौदी भऽ गेने हमर खर्चा डुमि गेल ओकर अदहा तँ अहाँकेँ दिअ पड़त, तहिना कहियो दाही कहि तँ कहियो कीड़ी-फतिंगीक प्रकोप कहि मास्टरे

साहैबक ऊपर खाइन खसा दैन, मास्टरो साहैब बुझैथ जे दू गोरेक बीचक विवाद छी, ऐमे अनकर किए समय लेब। समैये ने सभ किछु छी, जँ समैयक मालिक अपने बनि जाइ तँ कोन मलिकाना बाँकीए रहल। दुनू गोरे- माने बँटेदार मालिक आ बँटेदार किसान-क बीच अन्तो-अन्त यएह पनचैती होइन जे जे भेल से बीतल समयमे भेल, आबसँ धुअल-पखारल दुनू गोरे भेलौं। माने किनको ऊपर कोनो देनी-लेनी नइ रहल।

ओना, मास्टर साहैबक जातिक बीच प्रतिबन्ध छेलैन जे महिला खेत-पथारक काज नइ करती, तैसंग शिक्षकक परिवार रहने अनुकूलतो छेलैन। माल-जाल नइ पोसती। नइ पोसैक कारण छल, अपने हाथे गाए दूहब परहेज छेलैन। ओना, परिवारक सदस्यक चरित्र गठन जे छेलैन ओ इमानदारीक गठन छेलैन। जइसँ झूठ बाजब, केकरो कोनो वस्तु परोछमे छुअब, केकरो अवाच कथा कहब सभसँ परहेज छेलैन। मुदा कर्मठ इमानदार तँ मेहनतेक बलपर ठाढ़ होइत अछि, तेकर अभाव परिवारमे रहबे करैन।

हमरा परिवारमे दादी-माँक बिआह नइ हेबाक चाहिऐन। ओ शिक्षकक बेटी, शारीरिक श्रमसँ हटि पलित रहैथ, जखन कि हमर परिवार खेतमे काज करैबला छेहा बोनिहार, परिवारक बुत्ता बोनियेँ छल। मुदा जतिआरे बन्हन तँ एहेन होइते अछि जे कुल-मूलक जोड़ तकैए। जखन कि जोड़ हेबा चाही काजक जे जिनगीक बुनियाद छी। धन-सम्पैत नहि। कुल-मूलक रक्छा ठाढ़ जिनगी भेला पछाइते ठाढ़ रहि सकैए।

बस स्टेण्डमे उतैरते भैयाकेँ फोन करैत कहलयैन-

“कनी दादीकेँ फोन दियनु।”

फोन लइते दादी बजली-

“के छिअँ बेकला?”

“हँ”

"तोरेले बेकल छी।"

"किए बेकल छी?"

"साल भरिसँ तोरा नइ देखलियौ, तँए मन बेकल भऽ गेल।"

मनमे भेल जे जँ आइ हमहूँ गामे रहितौं, तखन दादी-माँकेँ एना बेकल होइक कोनो सम्भावने ने रहैत। मुदा...। अपनो कमजोरी केतौ-ने-केतौ जरूर अछि। चाहितौं तँ जैठाम नोकरी करै छी तहूठाम दादी-माँकेँ रैखतिऐन तैयो बेकल होइक सम्भावना नै रहैत। मुदा सबालो तँ सबाल छी, दादी तक परिवारकेँ बाहरक नोकरी केनिहार जे कियो रखने होथि, वएह टा ऐ परिस्थितिकेँ आँकि सकै छैथ। पाशा बदलैत आस लगा कहलयैन-

"दादी, ताबे अहाँ चाहपर नजैर दियौ, हम पहुँच रहल छी। दुनू गोरे संगे चाह पीब।"

दादी कि आब ओ दादी छैथ, आब तँ बेटा-पुतोहु, पोता-पोतीसँ भरल-पूरल परिवारक दादी छैथ, तहूमे जखन हमरा देखैले एते बेकल छैथ, तखन हमर चाहक तृष्णा सुनि आरो बेकल हेबे करती। एके मुहेँ, लगले सुरे जोरसँ बजली-

"एक गोरे आगू जा कऽ देखहक, कनियाँ अहाँ जल्दी चुल्हि पजाइर चाहक बरतन चढ़ाउ।"

अपना घरसँ कनी पाछूए रही आकि डेढ़ियापर ठाढ़ दादी-माँपर नजैर पड़ल। मनमे तूफान जकाँ उठि गेल जे पहिने पएर छूबि गोड़ लागि किछु कहबैन आकि पहिने दुनू हाथ जोड़ि फरिक्केसँ कहैत लग पहुँच पएर छूबि किछु कहिऐन। मुदा से भेल नइ, अगुआ कऽ बजैसँ पहिने ऐगला बाहन जकाँ दादीए बजली-

"बौआ, खाइ-पीबैमे दीक ते ने होइ छह?"

दादीक बात सुनि मनमे हँसियो लगए आ ईहो हुअए जे दादी-माँ

परिवारक नमहर इतिहास पुरुख सन छैथ, ओहिना थोड़े बजली। सभ कालखण्डक अपन खण्डित आ बिखण्डित इतिहास अछि...।

..ताबे दरबज्जापर पहुँच गेलौं। सभ किछु पहिनेसँ ओरिया कऽ दादी-माँ रखने छेली। पहुँचते पहिने पएर धो चौकीपर बैसलौं। दादियो-माँ बैसली, चाहो आएल। जेना दादी-माँसँ असगरे कोनो खास गप करब। तहिना परिवारक सभ कियो ओतएसँ सहैट गेला। खाएर जे से...।

दू-घोंट चाह पीब पुछलयैन-

“दादी, आइक समयमे खाएब-पीब कोनो तेहेन समस्या नइ रहि गेल अछि, तखन किए एहेन बात पुछलौं?”

हमर बात जेना दादी-माँक हृदैमे पहुँच गेलैन तहिना बजली-

“बौआ, उकड़ू आ सुकड़ू समय होइ छइ। जइ दिन ऐ घरमे बास लेलौं तइ दिनमे नैहरमे कहियो कोनो खेती-पथारीक काज नइ केने छेलौं। पेट बोनियाँ परिवारमे आबि गेलैं। बाधक खबारक खोपड़ी जकाँ घर, अपना बीतो भरि जमीन नहि। दिनक-दिन बोइन-बुत्ता होइ छल, तइसँ कहुना-कहुना दुनू साँझ भरि पेट कि अदहा पेट खाइ छेलौं...।”

बिच्चेमे दादी ठमैक गेली। जेना आँखिक नोर मुँहमे चलि गेल होइन तहिना। एका-एक बाजबसँ रूकब देख पुछलयैन-

“तब की भेल?”

विस्मित होइत दादी बजली-

“मघाइर समय रहै, दौन-दोगौन, नार-पात समटा गेलइ। बोनिहारक काज हेरा गेल। मुदा से चेतलौं। चेतलौं ई जे, ताबे ससुर जीबते रहैथ, ओछाइन पकैड़ नेने रहैथ, कहलयैन- बाबू, एक गोरेक कमाइसँ परिवार ठाढ़ नइ रहत। परिवार ठाढ़ हएब भेल परिवार जनक ठाढ़ हएब, परिवार-जन ताबे तक नइ ठाढ़ रहत जाबे पेटमे दाना नइ

रहतै। तइले तँ परिवारेक लोक ने सोचि-विचारि किछु करता।"

बिच्चेमे पुछलयैन-

"तैपर ओ की कहलैन?"

कहऽ लगली-

"बौआ, जहिना निरोग युवकक विचारमे आ रोगाएल-बुढ़ाएलक विचारमे पारिस्थितिक अनुकूल बदलाव अबै छै तहिना ससुर कहलैन, नीक-अधलाक विचार करैत आगू डेग उठाएब।"

फेर पुछलयैन-

"तेकर बाद की केना भेल?"

कहलैन-

"नैहरमे खेत-पथारक काज करब वर्जित छल, मालो-जाल तहिना छल। मुदा ऐठाम खेत-पथार जाएब वर्जित नइ अछि। रहल बात परदा-पौसक, सोचलौं तेकरो रस्ता किछु-ने-किछु लगत। खेत-तमनीक समय आबि गेल छल। अन्हार-इजोत तँ रातिये-दिन ने होइए। रातिके पतिक संग कोदरवाहि शुरू केलौं। दू मासक कठिन मेहनैत चारि मासक जिनगी बना देलक। आठे मासक घटबी रहल, जे बोनिहारक अनुकूल समय छीहे। नैहरमे फूलक गाछ रोपि फुलवाड़ीक काज करिते छेलौं, ओहो लूरि रहबे करए। मनमे भेल, फुलबाड़ीए ने बाड़ियो बनैए! तखन तँ फूल-फूलमे अन्तर छइ। कोनो फूल नीक फलो नीक सुगंधो दइए आ किछु सुगंधेटा आ किछु एहनो तँ ऐछे जे ने नीक फले दइए आ ने नीक सुगंधे।"

दादीक बात सुनि मनमे भेल- बाप रे! जँ दादी अबैसँ पहिने मरि गेल रहितैथ तँ एहेन अमृत वचन केतएसँ अबितए। गद-गद मने कहलयैन-

"दादी, अहाँ कहियो ने मरब।"

जेना दादियोकेँ बुझले रहैन तहिना बजली-

"मासमे एक्के दिन मरैक डर होइए, बौआ। बाँकी उनतीस दिन कोन काल हमरा सोझा औत।"

दादी-माँ की कहलैन, से बुझबे ने केलौं। मुदा एक दिन आ उनतीस दिन मन रहल। पुछलयैन-

"दादी, ई की कहलिऐ- एक दिन आ उनतीस दिन?"

दादी बजली-

"बौआ, हमर जनम इजोरिया रातिमे भेल अछि तँए खाली इजोरियाक एकादसीक डर होइए जे कहीं...।"

❑ **साभार : मधुमाछी**

# भँसैत नाह

बेर-बेर ऐ घाटपर नाह-डुम्मीक घटना होइ छै तैयो आन घाटसँ बेसी चलती ऐ घाटक रहिते छइ। बेसी चलतीक कारण ई अछि जे यात्रीक एहेन धारणा बनले छैन जे छह मासक रस्ता नै चली साल भरिक चली। भलेँ कोनो धार किए ने छह-मसुए हुअए।

छह-मसुआ ई भेल जे, जे धार जेठ-अखारमे मोजैर-फुला सौन-भादोमे पूर्ण जुआनी पाबि दुब्बर-दानर सल-सलिआ धारकेँ तेना ने झाँपि दइ छै जे ओ सल-सलिआ धार ऊपरेसँ झँपा जाइत अछि। तेकर कारण ईहो छै जे बादलो बेइमानी करैए, जेना समुद्र ओकरा जल-वायु रूपमे जलधार बनबै छै तेना ओ  बेइमानी करै छै जे केतौ फाटि-फाटि बरसै छै तँ केतौ झकसबो नदारथ कऽ दइ छइ। मुदा तैयो अपन दोख कहाँ मानैए। बुर्ड़ाक भऽ छाती खोलि बजैए जे समुचित दिशामे बढ़ए चाहै छी, मुदा हवाक झोंक तेना ने छिड़िया दइए जे राइ-छीती भऽ जाइ छी।

मेघक दमगर विचार सुनि धार पार करब यात्री मानियेँ लइए। ओना, घाटक चलतीक दोसरो कारण छै जे दोसर-तेसर घाट पार करैमे कनी समेओ बेसी लगै छै आ रस्तो कनी बलुआह टपऽ पड़ै छइ। तँए ओइ घाट सबहक कम चलती रहै छइ।

ओना, तीन बेर नाह-डुम्मी भेल, से सभ यात्रीकेँ बुझल छै मुदा

पानिमे कि कोनो गाछक घटना होइ छै जे हाड़-पाँजर टुटत, तँए जिनगीक तँ एते गारंटी भइये जाइ छै हाड़-पाँजर तोड़ि काहि काटि जे मरब तइसँ नीक ने भेल जे पानियोँ पीब आ डुमकी कटैत प्रवाहो भइये जाएब।

ओना, एहेन घटना पहिनौं भेल मुदा औझुका जकाँ नै भेल छल। जेहने वैतरणी पार करैबला माझी तेहने यात्री। कहू जे कनीए हटि चौरगर धारक पेट छइ। चौरगर भेने ऊपर आबि, गहींरसँ समतल भऽ गेने पार करब अधिक बिसवासू होइ छै, से नै चलि साँकर होइत पार करब उकड़ू होइते अछि। नैयाकेँ ने खेबाक चिन्ता होइ छै आ ने मरैया-जीबैयाक। ओ ने कहियो मरत आ ने घाट छोड़त। तँए जँ गीत गाबि नाह नै चलबए तँ मरदानी की आ बिनु मरदानी जिनगानी की। तहूमे जलतरंगसँ लऽ कऽ कठतरंग धरिक साज-सजल रहत आ बौक भेल देहकेँ कठुऔने रहत तँ कठुआइत-कठुआइत तेना कठुआ जाएत जे बुझबे ने करबै जे कठुआएल छी आकि कठगर। मुदा कठगर बेसी गतिगर होइ छइ।

ओही साँकर पेट देने यात्री सभ ओइ पार जेबाक जोर केलक। ओना, नैयाक मन खतरापर जरूर रहै मुदा यात्रीए जुतिसँ चलब अपन कर्तव्य बुझि बेसी जोरो ने केलक। तेतबे नै रहै, मनमे ईहो रहै जे धार पार करब कर्तव्य छी आकि ई घाट-उ घाट करब। अपनाकेँ भीतरे-भीतर नैया अपमानित जकाँ होइत देखलक। से केना मानैत।

बीच धारक पानि ओहने समटा कऽ तेज भऽ गेल छल जेकरा तोड़ि नाह पार करब कठिन बुझि पड़लै। मुदा यात्रीक ढीठपना एहेन जे जल-प्रवाह भऽ जाइ तँ भऽ जाइ मुदा रस्ता नै छोड़ब। बीच धारमे नाहकेँ पहुँचते नैया बाजल–

“यात्री भाय, समधान भऽ जाउ, भऽ सकैए बीचमे कहीं भकमोड़ ने लऽ लिअए। अपन-अपन भार अपना-अपना ऊपर रहल। हमर केकरो

ने।"

यात्रीक बीच कटौझ शुरू भेल। किछु आगूसँ बानर जकाँ काटब शुरू केलक तँ किछु पाछूसँ मूस जकाँ कटनियाँ करए लगल। मुदा तही बीच एकटा यात्री जोरसँ बाजल–

"जखन नाहमे सवार भेलौं तखन ओइ पार गेने बिना नै छोड़ब।"

ओइ यात्रीक गपक अन्तिम विराम भेबो ने कएल छल आकि अपनेमे कुकुड़-कटौझ शुरू भेल। जोर-जोरसँ एक-दोसरकेँ पकड़बो केलक आ चांगुरक संग दाँतोसँ दकड़ब शुरू केलक। नाह हिलडोल करए लगल। नैया बाजल–

"यात्री भाय, जेकरा जेहेन लूरि-बूधि अछि से तेना बँचब, नै तँ नाहक संग बिच्चेमे डुमि जाएब।"

नैयाक बात सुनि पहिलुके यात्री दोहरबैत बाजल–

"कियो करए आपले माएले ने बापले।"

बजैत धारमे कूदि गेल।

भकमोड़क नाह चकभौर काटए लगल। बामी-दहिनी जलधार पाबि एकोशिया भऽ गेल, बानरक तराजू जकाँ यात्री दोसर दिस झूकि गेल। एकोशिया भार पड़ने नाहो एकोशिया होइत-होइत पनिया गेल। नाहक संग यात्री आ पनियाएल पेट, बिच्चे धारमे डुमि गेल।

❑ **साभार : अप्पन-बीरान**

# कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर
एगच्छा आमक गाछ
प्रीगर शत्रु
दहेजुआ गाए
गठूलाक गारि

गण्डा
अब-तब
झूठे
उजगी
जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू
नोकरिहारा
अनका बेर ओंघी
लगबे ने कएल
ओ दिन

पान पराग
फोंक मकड़
झकास
ठोररंगू
हकार

ओझरी
दोती बिआह
कचहरिया रोग
नटकिया गति
भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल
पछताबा
परिवारक प्रतिष्ठा
पागलखाना
खाए चाहैए

गामे उपैट गेल
खतियाएल घर
किछु ने फुरैए
तिलकोरक तरुआ
पटोर

बेटाक चलैत
उग्रघारा
बेटीक कुभेला
दोहरी हाक
खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

जिगेसा

लेहाज

जानक मोल

समर्पण

स्तब्ध

भोरक झगड़ा

शालीनता

पान

पवनक विवेक

हरवाहि

समरथाइक भूत

समता

सुखाएल सूरत

खजाना

मौसी

कर्ज : 2

टुटल मनक जुटान

ऐँठ साड़ी

अस्तित्वक समाप्ति

जाति नहि पानि

विदाइ

कर्तव्यपरायन सुगा

निशाँ

दान-दैछना

माइक वचन

मथाहाथ

पाइक मोल

गंजन

नमहर फेरा

अपन काज

बेटपन

उमेद

एकोटा ने

कथनी नै करनी

मुसाइ पण्डित

घरवास

भूल

बत्तीसोअना

पुरनी भौजी

अर्द्धांगिनी

खटहा आम
बुधि-बधिया
एकता
उमेरक लेहाज
केते लग केते दूर : 1

जितिया पाबैन
धर्मक असल रूप
शिनीची सिनेह
नवान
असुध मन

महिरम
हाथक जिनगी
सिखबैक उपय
दनगर घास
ढकरपेंच

मुसरी आ घोड़ा
जाड़ फाटि गेल
मुँहक बात मुहेंमे
कनीटा बात
गोहिक शिकार

जारैनक दुख मेटा गेल
इज्जत उतैर गेल
चापाकलक पाइप
घसवाहि
चटवाह

दुरकाल
गामक कटान
मेटाइत जिनगी
कपटी मित
अजाति

परदेशी बेटी
घरदेखिया
ऊँच-नीच
ऑपरेशन
फेर पुछबैन

समधीन
कनमन
नमहर घरक चोइर
पटोटन
पुरुषार्थ

पेटगनाह

गंगा नहेलौं

बकठाँइ

गुलेती दास

खर्च

डॉक्टर हेमन्त

मनुखक मूल्य

तीन जुगिया भाय

आश्रम नहि सोभाव बदली

मायराम

शुभचिन्तक

विधवा बिआह

वैष्णवी भगवती

प्रेमी

शंका

मुइलो बिसेबैन

प्रतिभा

केतौ नै

हमर कोन दोख

असगरे

डीहक बटबारा

मूलधन

छूआ

लफ साग

नहरकन्हा

अपन सन मुँह

पाप आ पुण्य

चोरक चोरबती

मातृभूमि

कटा-कटी

हरदीक हरदा

बेरपर

झगड़ाउ-झोटैला

फॉगु

बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर

पतझाड़

धरम काँट

तिलासंक्रान्तिक लाइ

कठफल

असहाज
बाबा बेलेश्वरनाथ
भोँटक गहमी
जेतए जे हौउ
नौमीक हकार

एकतीस मार्च
अगिलह
स्वर्ग आ नर्क
पीरारक फड़
मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप
माघ नहाइले जाएब
अतहतह
चौरचनक दही
तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि
डभियाएल गाम
अखरा-दोखरा
गाछपर सँ खसला
सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा
पुरान साड़ी
अभिनव अनुभव
अड़िकट्टा चोर
उझट बात

बहिन
मर्माहत
अलपुरिया बरी
दुधियाएल बरखा
चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण
संकट
काँच सूत
बीरांगना : 2
सोग

विघटन
बगदल गाम
कलंक
उनटन
विद्रूताक मद

क्रान्तियोग

पाही पट्टी

गोहाइर

मरियाएल मन

मदैत नै चाही

बोनिहारिन मरनी

आशापर पानि पड़ल

बुढ़िया दादी

बाबी

बुधनी दादी : 1

क्रियाशील

समझौता

रत्न गमेवाक दुख

भाइक सिनेह

हारि

जाम

विदाइ-दैछना

टाइपिस्ट

गजपट खेती

सुआद

अनेरुआ बेटा

कछमछी

समदाही

वारंट

एकाग्रचित

गलगर भैंस

प्रवल इच्छा

अधखरूआ

मोहरा

भँसियाएल बाल-बोध

दूटा पाइ

अपने केलहा

समुद्री विद्या

बीरांगना : 1

अनुशासन

बिहरन

हारि-जीत : 1

अपसोच

अपन पुरखाक डीह

खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ

केते लग केते दूर : 2

कुघाटक मृत्यु

ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल

मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता

हारि-जीत : 2

हँसीएमे उड़ि गेलौं

मनोरथ

धरती-अकास

विचार हेरा गेल

घर तोड़ि देलिऐ

आजुक जिनगीक आइ परीछा

दोहरी मारि

धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल

सीरक गाछ

परतीहा खढ़

गरदैन कट्टा बेटा

कर्जखौक

सुरता

सगहा

पकिया चेला

अनगढ़ चेतना

धोतीक मान

चुप्पा पाल

जन्मतिथि

दियरबा-भैंसुर

फज्झैत

भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा

मनुखदेवा

अप्पन-बीरान

सुभिमानी जिनगी

मरूभूमि

मइटुग्गर

आने जकाँ

उमकी

मुँहक खतियान

ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकेट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। -**गजेन्द्र ठाकुर**

**जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार :** 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।

₹ 50

9 789388 421683

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452